The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

# नारी शिक्षा में महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का योगदान

**डॉ. लालमणि प्रजापति**
**(असि. प्रोफेसर)**
**गांधी स्मारक पी. जी. कालेज समोधपुर, जौनपुर।**

**सारांश-**

*19वीं शताब्दी शताब्दी में भारतीय समाज अंधविश्वासी परंपराओं तथा नवीन विचारों की द्वंद में उलझा हुआ था। एक ही मानव समूह सैकड़ों जातियों- उपजातियों में विभक्त था। प्रत्येक जातियों में अपने अलग संस्कार और रीतिरिवाज थे। उन्हें समाज में दुश्मन की तरह देखा जाता था। नारी शिक्षा उस काल में समाज की दृष्टि से एक निराशाजनक युग ही कहा जा सकता है। स्त्रियां चाहे किसी भी वर्ग या जाति की क्यों ना हो, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं था। महात्मा बुद्ध के बाद फुले दंपति ने देश में महिलाओं के प्रति आडंबर, जटिल कुरीतियों को सशक्त व सार्थक चुनौती दी। बुद्ध के बाद यदि किसी ने पीड़ित व शोषित वर्ग के लोगों को ऊंचा उठाने का साहस किया तो सिर्फ फुले दंपति ने किया। फुले दंपति द्वारा एक बार पुनः नारी का खोया सामाजिक सम्मान शिक्षा के माध्यम से दिलाने का प्रयास किया। जिसका तत्कालीन समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जिस कारण सकारात्मक सोच रखने वाले अधिकांश लोगों ने फुले दंपति के कदम की सराहना की और इस व्यवस्था में सहयोग दिया। जो तत्कालीन समय में बहुत बड़ा सामाजिक परिवर्तन एवं स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा कदम साबित हुआ। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में फुले दंपति के प्रयासों की पारांगिकता को वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया।*

## प्रस्तावना :-

आधुनिक भारत के महान समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपने समय में शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक बंधनों में जकड़े शूद्र एवं अति शूद्र समाज के उन्नति का विचार रखा। वे शोषित एवं उपेक्षित

लोगों की शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक गुलामी से मुक्ति का दर्शन प्रस्तुत करते हैं। सावित्रीबाई न केवल ज्योतिबा फुले की अर्धांगिनी थी, वरन् उनके क्रांतिकारी आंदोलन की भी अर्धांगिनी बन गई थी। ज्योतिबा फुले के समान ही सावित्रीबाई फुले भी धैर्य, समर्पण एवं दूर दृष्टि जैसे अलौकिक गुणो की स्वामिनी थी। उन्हें नारी सेवा के लिए अपना घर, बच्चे एवं सभी सुखों को त्याग कर कांटो भरे रास्तों पर चलना पड़ा था। ज्योतिबा फुले समाज को शिक्षित करने का संकल्प लेते हुए पहले कदम के क्रियान्वयन में अगस्त 1848 में बुधवार पेठ मोहल्ला में तात्या साहब भिंडे की हवेली में पहला बालिका विद्यालय खोला और इस पाठशाला में शिक्षिका का कार्य उनकी सह चारणी सावित्रीबाई फुले ने हीं निभाया जो आधुनिक भारत की पहली शिक्षिका भी थी। समाज के प्रबल विरोध के बावजूद फुले दंपत्ति ने महात्मा शिक्षा के क्रांति को जारी रखा परिणाम स्वरूप एक के बाद एक ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले के मार्गदर्शन में विद्यालय खुलते गए और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया अधिक तेज हो गई। तत्कालीन भारत की स्थिति के आधार पर ज्योतिबाराव द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर यह निश्चित हो जाता है कि भारत में पुनः शिक्षा की क्रांति ज्योतिबा राव फुले द्वारा की गई जिसके लिए 11 मई 1888 को मुंबई के कोलीवाडा सभागार में भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह में उपस्थित जन समुदाय द्वारा ज्योतिबा को 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक गुलामगिरी में व्यक्त किया -विद्या विना मति गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र गये। इतने अनर्थ एक अविद्या ने किए।

उद्देश्य--:

प्रस्तुत पत्रिका का उद्देश्य स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का योगदान संबंधित पहलुओं का ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन करना, विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डालना और भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

परिकल्पना--:

प्रस्तुत पत्रिका में परिकल्पना की गई है कि फुले दंपति द्वारा किए गए शैक्षिक कार्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रखकर उनकी प्रासंगिकता दर्शना। जिससे वर्तमान पीढ़ी उनके कार्यों को अपना सके। एवं नारी को सम्मान दे सकें।

प्रविधि--:

प्रस्तुत पत्रिका में ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। विभिन्न स्रोतों में पुस्तकों ,शोधपत्रों, पत्रिकाओं एवं इंटरनेट द्वारा अध्ययन किया गया है।

## स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण--:

ज्योतिबा फुले विश्व के पहले महापुरुष थे जिन्होंने स्त्री को पुरुष से भी श्रेष्ठ माना है उनकी दृष्टि में स्त्री को सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो पुरुषों को प्राप्त है यदि पुरुष बहुपत्नी विवाह का अधिकारी है तो स्त्री भी बहुपति विवाह की अधिकारिणि होनी चाहिए।अन्यथा पुरुषों का यह अधिकार निषिद्ध कर देना चाहिए।

19वीं सदी के सुधार आंदोलनों व सुधार वादियों को स्त्री की स्थिति को लेकर काफी गहरी चिंता थी। स्त्री की सामाजिक स्थिति ठीक नहीं थी। स्त्रियों की भूमिका केवल गृह कार्य तक ही सीमित थी, बच्चों का पालन -पोषण तो प्रकृति से ही स्त्रीत्व से संबद्ध है। प्राचीन काल से वर्तमान तक स्त्रियों की भूमिका मान्य रही। वो चाहे खेतों में कार्य करें या सफेदपोश नौकरियों में आज भी उसकी यही कार्यकारी भूमिका गौण है। ज्योतिबा ने शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों को जो अधिकार दिलाए यह स्मरणीय है। ज्योतिबा के क्रांतिकारी विचारों ने भारतीय सामाजिक इतिहास को शक्ति तथा गरिमा प्रदान की है। 12 वीं सदी की ओर जाते समय देश को उनके विचारों की यह विरासत नए काल की प्रेरणाओं का परिचय देगी। आज जिसे हम शिक्षा कहते हैं वह ज्योतिबा के जन्म से पूर्व अस्तित्व नहीं थी, न ही समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का अधिकार ही प्राप्त था।

सामाजिक पुनर्रचना के लिए के लिए राष्ट्रपिता फुले ने जिस तत्वज्ञान को स्वीकार किया उनमें समानता और बंधुत्व के तत्व की प्रधानता है ।उनके बंधुभाव की भावना देश, काल, धर्म, संप्रदाय आदि बंधुओं को लांघकर एक बंधन मुक्त समाज की रचना तक व्यापक थी। इसलिए उन्होंने सार्वजनिक सत्य धर्म की कल्पना लोगों के सामने रखी। संपूर्ण मानव जाति के लिए केवल एक धर्म होना चाहिए ।उनकीधर्म संकल्पना सत्य और सत्य के आचरण पर जोर दिया। उनके अनुसार नए मानवीय मूल्यों का निर्माण करना अनिवार्य है।

शिक्षा नीति को सही दिशा देने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ज्योतिबा फुले का अमूल्य योगदान है जो निम्नवत है।

विद्यालय और स्थानीय भाषा का विकास- ज्योतिबा फुले समाज को शिक्षित करने का संकल्प लेते हुए पहले कदम के क्रियान्वयन में अगस्त 1848 में पहला बालिका विद्यालय खोला। संस्कृत केवल उच्चवर्गीय भाषा होने से एकाधिकार की द्योतक बन गई। ज्योतिबा फुले ने स्थानीय भाषा में ही शिक्षण की व्यवस्था की, पाठ्यक्रम भी मराठी में था। उनकी नजर में उसी भाषा के माध्यम से शिक्षा की प्राप्ति हो जो रोजमर्रा की भाषा हो। मनुष्य उसी के माध्यम से अच्छी तरह सीख पएगा। अंधकारमय समाज में ज्योतिबा द्वारा ज्ञान के एक दीपक ने अंग्रेजों को भी सुझाव दिए, कि भारत में

(१८४९) विभिन्न प्रांत हैं। विभिन्न प्रांतों की अपनी स्थानीय भाषा है। अतः उसे स्थानीय भाषा के माध्यम से ही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। अंग्रेजों द्वारा 1854 ईस्वी की शिक्षा नीति 'चार्ल्स वुड डिस्पैच' में प्राथमिक स्तर पर स्थानीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। ज्योतिबा फुले ने विद्यालयों के विकास के लिए जगह-जगह विद्यालय खोलें एवं शिक्षा का प्रसार किया और भारतीय समाज को वास्तविकता से अवगत कराने के लिए ज्योतिबा फुले ने स्थानीय भाषा साहित्य का सृजन किया। क्योंकि कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी अपने साहित्य को दूसरों से सुनकर या पढ़कर अपनी वास्तविक स्थिति को जान सके और ऊपर उठ सके। ज्योतिबा फुले द्वारा पूरे महाराष्ट्र में विद्यालयों का विकास कराया गया। उनके द्वारा संचालित अट्ठारह विद्यालय का जिक्र मुंबई प्रेसिडेंसी के शिक्षा अभिलेखों से मिलता है। जो निम्नवत है।

भिण्डेवाडा पपुणे(१८४८) , हरिजन वाडा, पुणे (१८४९), हड़पसर, पुणे (१८४८),ओतूर, पुणे (१८४८),सासवड़, पुणे (१८४८),अल्हाट का घर, कस्बा, पुणे (१८४९), नायगांव, तालुका खंडाला, जिला सतारा (१८४९), शिरवर, तालुका खंडाला, जिला सतारा (१८४९), तलेगांव वनढेरे, जिढ़ला पुणे(१८४९) अंजीरवाडी माजगांव (१८५०),करंजे, जिला सतारा (१८५०),भिगांर(१८५०),मुंढवे, पुणे १८५०) अप्पा रसाहब चिपलूनकर हवेली, पुणे (१८५१), नाना पेठ, पुणे (१८५१), रास्ता पेठ, पुणे (१८५१), बेताल पेठ, पुणे (१८५२)

आदि। विद्यालय खोला गया है।

शिक्षा नीति को सही दिशा देने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का अमूल्य योगदान है। जो निम्नलिखित हैं।

### छात्रावास की व्यवस्था –

ज्योतिबा फुले अपने घर के पास एक छात्रावास की व्यवस्था की। इस छात्रावास में मुंबई, ठाड़े एवं जुन्नार आदि स्थानों के छात्र रहते थे। गरीब छात्रों के लिए निःशुल्क व्यवस्था थी। ज्योतिबा की मृत्यु के बाद छात्रावास, उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले एवं उनका पुत्र यशवंतराव ने चलाया।

### प्रौढ़ शिक्षा –

सन् 1855 ईस्वी में ज्योतिबा फुले ने प्रौढ़ शिक्षा का शुभारंभ किया। उन्होंने खेतों में या अन्य जगह काम करने वाले मजदूरों और गृहिणियों के लिए रात्रि पाठशाला खोली एवं अध्यापन कार्य चलाया। यह भारत की पहली रात्रि पाठशाला व प्रौढ़शाला थी। उस समय शिक्षा घर- घर पहुंचाने की पहल चल रही थी। ज्योतिबा फुले ने श्रमिकों के लिए रात्रि स्कूल खोलकर उन लोगों का शिक्षा की तरफ ध्यान आकर्षित करने का कार्य किया था। वर्तमान में भारत सरकार

साक्षरता अभियान व सर्व शिक्षा अभियान पूरे देश में चला रही है। जो १९वीं सदी में ज्योतिबा फुले ने पुणे के आसपास कि गांवों में प्रारंभ किया था।-ज्योतिबा ने विभिन्न स्तरों पर हंटर कमीशन को सुझाव दिए जो निम्नलिखित है।

क:- प्राथमिक शिक्षा पर बल-

१. ग्रामीण क्षेत्रों के लिए स्वतंत्र शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
२. गणित, इतिहास, भूगोल, और व्याकरण का प्रारंभिक ज्ञान कराया जाए।
३. कृषि संबंधी हर तरह का ज्ञान बच्चों को दिया जाए।
४. सामान्य,
५. ज्ञान नीति तथा आरोग्य का ज्ञान भी दिया जाना चाहिए।
६. अध्ययन व शैक्षणिक यंत्र के बीच सुधार किया जाना चाहिए।
७. शिक्षकों की नौकरी की शर्तें निर्धारित हो।
८. शिक्षकों के लिए नियम व स्वास्थ्यवर्धक वातावरण होना चाहिए।
९. अध्यापन की परीक्षा पास व्यक्ति को ही पढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाए।
१०. शिक्षकों की स्थिति सुधारने हेतु ₹12 प्रति माह से अधिक वेतन दिया जाए।
११. प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में इजाफा किया जाए।
१२. नगर पालिकाओं के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों की व्यवस्था होनी चाहिए।
१३. छात्र- छात्राओं को पुरस्कार व छात्रवृत्ति प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।

ख--: उच्च शिक्षा में ज्योतिबा फुले का विचार--:

मुंबई विश्वविद्यालय ने छात्रों को स्वाध्याय के आधार पर प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति दी। और अन्य विश्वविद्यालयों से भी आग्रह किया गया कि वह नवयुवकों को घर पर रहते हुए, अपने कार्य करते हुए स्नातक बन सकें,और शिक्षा का प्रसार भी हो सकेगा।

ग:- तकनीकी शिक्षा –

ज्योतिबा फुले ने तकनीकी शिक्षा के लिए सुझाव दिया। अहमदाबाद के अभियांत्रिकी महाविद्यालय में दलित नवयुवकों को प्रवेश निःशुल्क दिलाया। सत्यशोधक के माध्यम से ऐसे कई कार्य किए,जो उनके शिक्षा के क्षेत्र के लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ।

आरक्षण व छात्रवृत्ति के प्रथम प्रस्तावक -

महात्मा ज्योतिबा फुले ने सर्वप्रथम १८८२ ई० में अत्यंत पिछड़े वर्गों के लिए नौकरियों में आनुपातिक आरक्षण व सबके लिए मुफ्त शिक्षा की मांग उठाई। सरकारी छात्रवृत्ति देने से अन्य वर्गों की उपेक्षा होगी और जो पहले से ही सुशिक्षित घरानों से हैं वहां प्रोत्साहन राशि देने से कोई लाभ नहीं। जहां शिक्षा में अरुचि है वहां छात्रवृत्ति से शिक्षा का प्रसार हो सकेगा।

## नारी शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले के कार्य-

भारतीय स्त्रियों के समस्त मानवाधिकार छीन लेने से उसकी जो दयनीय स्थिति हो गई थी, उससे उबरने एवं समानता व शिक्षा दिलाने के प्रयासों की कड़ी में अत्यंत महत्वपूर्ण नाम सामाजिक क्रांति, शैक्षणिक क्रांति के प्रणेता ज्योतिबा फुले का आता है। उनका जीवन उनकी स्वप्रेरणा एवं स्व प्रयासों से बना था। भारतीय नारियों को सम्मानजनक स्थिति दिलाने के लिए उन्होंने वास्तव में ही ऐतिहासिक कार्य किया। नारी शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिकन मिशन द्वारा संचालित कन्याशाला, जिसे मिस फर्राट नामक विदेशी महिला मिशनरी चला रही थी। ज्योतिबा उससे बहुत प्रभावित हुए और पुणे में लड़कियों के लिए ऐसी ही पाठशाला खोलने का निर्णय लिया। प्रथम पाठशाला की स्थापना बुधवार पेठ मुहल्ला में तात्या साहब भिण्डे के हवेली में 1 जनवरी 1848 इसवी को की गई। तथा 15 मई को कन्या पाठशाला की स्थापना की।

ज्योतिबा फुले के समान ही उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले भी अनेक कष्ट सहन करते हुए, समाज की प्रताड़ना सहते हुए, स्वयं शिक्षित हुई और भारत के प्रथम अध्यापिका का गौरव हासिल कर लिया। उन्होंने नारी शिक्षा आंदोलन हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया। वे भी नारी शिक्षा हेतु अपनी निःशुल्क सेवाएं देती और अपनी आजीविका हेतु खाली समय में मोटे गद्दे बनाकर बेचने का कार्य करती थी। ज्योतिबा एक सिलाई की दुकान चलाते थे। सावित्रीबाई के महान योगदान के संबंध में ज्योतिका ने कहा है- "अपने जीवन में जो कुछ भी कर पाया हूं, वह मेरी पत्नी सावित्रीबाई के सहयोग से ही हो सका है। वह कांटो भरे रास्ते में भी मेरे साथ कदम से कदम मिलाकर चलती रही।" 19वीं सदी में सार्वजनिक जीवन को अपनाने वाली प्रथम भारतीय महिला का गौरव भी उन्हें ही प्राप्त है।

कन्या पाठशालाओं की सफलता देखते हुए ज्योतिबा ने अनेक शहरों में विद्यालय खोलें, जिसका कार्यभार सावित्रीबाई के साथ सगुनाबाई आदि महिलाओं को दिया। उनमें से एक मुस्लिम महिला फातिमा शेख नाम का उल्लेख है। इन्होंने भी सावित्रीबाई का अनुगमन करते हुए सुधारवादी व क्रांतिकारी आंदोलनों में काफी योगदान दिया। फातिमा शेख, ज्योतिबा के मित्र उस्मान शेख की बहिन थी। जिसे पिता द्वारा घर से निकाल देने के बाद उन्होंने

अपने घर में शरण दी थी। यह उस समय की हिंदू-मुस्लिम प्रेम, सहयोग का अनूठा उदाहरण था। 19वीं सदी की प्रथम भारतीय मुस्लिम अध्यापिका होने का श्रेय भी इन्हीं फातिमा शेख को जाता है।

सावित्रीबाई फुले मात्र स्त्री शिक्षा आंदोलन तक ही सीमित न रही। उनका लक्ष्य स्त्रियों का चौमुखी विकास करना था। ज्योतिबा द्वारा खोले गए विधवा आश्रम व अनाथआश्रम की देखरेख सावित्रीबाई फुले करती थी। ज्योतिबा के निधन के बाद उनके द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज की बागडोर वर्ष 1891 से 1897 ईस्वी तक सावित्रीबाई ने संभाली। इन 7 वर्ष के कार्यकाल में अनेक सभा सम्मेलनों में जाकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया तथा संबंधित संस्थाओं का कुशल संचालन भी किया। वह मात्र अध्यापिका व समाजसेवी ही न थी। वे एक बुद्धिमान लेखिका तथा प्रतिभा संपन्न कवयित्री भी थी। उनके द्वारा कृत कविता संग्रह 'काव्य फुले' 1854 ई. में प्रकाशित हुई थी।

युग पुरुष की संज्ञा उसे दी जाती है जो एक नवीन विचार प्रणाली न केवल समाज के सम्मुख रखता है, बल्कि उसका प्रयोग भी करता है। ज्योतिबा फुले पतन के गर्त में गिरे संपूर्ण भारतीय समाज के उत्थान के लिए न केवल एक आश्चर्य व नवीन विचार प्रणाली ही प्रस्तुत की बल्कि उसका प्रयोग भी सफलतापूर्वक किया और वह है नारी शिक्षा की व्यवस्था।

निष्कर्ष –

शिक्षा के क्षेत्र में जितना कार्य फुले दंपत्ति ने किया है वह इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने का हकदार है। वस्तुतः सही मायनों में सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम क्रांतिकारी कार्यकत्री हैं। नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व अद्वितीय हैं। भारत की ऐसी महान नारियों को वर्तमान सरकारों ने अवगत कराने का कोई प्रयास नहीं किया है और न ही देश में चल रहे महिला संगठनों ने ऐसे प्रयास किए, परंतु महाराष्ट्र व महिला संगठन इसके अपवाद हैं। सावित्रीबाई पूरे देश का गौरव है और देश की हर जागरूक जनता का यह कर्तव्य बनता है कि वह भारतीय नारी, शिक्षा की प्रथम हिमायती नारी से अपने देश की नारियों को परिचित कराएं। आज फुले दंपत्ति के कार्य, उपलब्धि व प्रेरणा से भारत के अन्य राज्यों की सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है, परंतु फुले दंपत्ति के गुणों व कार्यों का उचित परिमार्जन नहीं हुआ, एवं वह सम्मान पूरे भारतवर्ष में अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। राष्ट्र के प्रति महत्वपूर्ण महापुरुषों के साथ ही विश्व के महानतम लोगों की श्रेणी में भी उनका नाम स्वत: आ जाता है, जिस पर उनका अधिकार है। महात्मा बुद्ध, कबीर, मार्टिन लूथर किंग, कार्ल मार्क्स जैसे महान लोगों की पंक्ति में फुले दंपत्ति का स्थान नियत किया जाना चाहिए। वह भारत के स्त्री शिक्षा के प्रणेता हैं।

नारी प्रेरणा स्रोत सावित्रीबाई भारत की प्रथम अध्यापिका, समाजसेवी, क्रांतिकारी महिला तो है ही साथ ही भारत में स्त्री मुक्ति आंदोलन के प्रणेता भी हैं। उन्होंने जिस स्त्री मुक्ति आंदोलन का सूत्रपात किया था, उसकी बदौलत ही आज अनेक महिलाएं उच्च पदों पर पहुंच सकी हैं। इस प्रकार सावित्रीबाई का नारी उत्थान में जो अभूतपूर्व योगदान था, वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारत की हर शिक्षित नारी उनकी ऋणी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची--:


1. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक, ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 248.
2. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 258.
3. मेघवाल, डॉ कुसुम, भारतीय नारी के उद्धारक बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर सम्यक प्रकाशन, दिल्ली तृतीय संस्करण 2010 पृष्ठ 70 71 72
4. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 61.
5. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 91.
6. मेघवाल डॉ. कुसुम, भारतीय नारी के उद्धारक डॉ. बाबासाहेब बी. आर. अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली तृतीय संस्करण 2010 पृष्ठ 73.
7. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 258.
8. सिंह, वी. एन. सिंह, जनमेजय, भारत में सामाजिक आंदोलन रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, दिल्ली, बंगलुरु, गुवाहाटी, कोलकाता, संस्करण 2016 पृष्ठ 221.
9. चंचरीक, कन्हैयालाल, आधुनिक भारत का दलित आंदोलन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृष्ठ 30.
10. मिश्रा, डॉ. प्रीति, "हिंदू महिलाओं के जीवन में धर्म का महत्व" आदित्य पब्लिशर्स, बीना मध्य प्रदेश, संस्करण 2001 पृष्ठ 51.

11. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 88.
12. मेघवाल, डॉ. कुसुम, भारतीय नारी के उद्धारक बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन दिल्ली, तृतीय संस्करण 2010 पृष्ठ 73.
13. मेघवाल, डॉक्टर कुसुम, भारतीय नारी के उद्धारक बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन दिल्ली, तृतीय संस्करण 2010 75, 77, 78, 80.
14. आचार्य डॉ. हेमलता, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 89.
15. मेघवाल डॉ. कुसुम, भारतीय नारी के उद्धारक डॉ. बाबासाहेब बी. आर. अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन दिल्ली, तृतीय संस्करण 2010 पृष्ठ 72.

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

# THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/04


# Certificate Of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

**डॉ. लालमणि प्रजापति**

***for publication of research paper title***

**नारी शिक्षा में महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का योगदान**

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

**Dr.Neeraj Yadav**
**Executive Chief Editor**

**Dr.Lohans Kumar Kalyani**
**Editor-in-chief**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com